भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)
दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी

प्रेस विज्ञप्ति

06 मई, 2015

सलवा जुडुम का नया संस्करण और बस्तर में ग्रीनहंट का सहायक संगठन

सलवा जुडुम–2 को परास्त करने जनता का आह्वान

जीरम घाटी में पीएलजीए के हाथों मारे गये जन दुश्मन महेंद्र कर्मा का बेटा–छवींद्र कर्मा और सलवा जुडुम के गैंग लीडरों में से एक व भाजपा का गुण्डा चैतराम अट्टामी जैसों द्वारा बस्तर में 'शांति' और 'विकास' के लिए सलवा जुडुम–2 शुरु करने की 5 मई को घोषणा की गई और 'विकास संघर्ष समिति' का गठन किया. हिन्दुत्व फासीवादी भाजपा सरकार के संरक्षण में कांग्रेसी कर्मा परिवार एवं भाजपाई गुण्डों व जन विरोधियों का संगठित हत्यारा–गुण्डा गिरोह है, यह सलवा जुडुम – 2 इसे दरअसल सलवा जुडुम के नये संस्करण और बस्तर में ग्रीनहंट के सहायक संगठन के रूप में देखा व समझा जाना चाहिए। पहला 'जन जागरण', सलवा जुडुम, ग्रीनहंट, अब फिर सलवा जुडुम–2 –ये तमाम अभियान असल में जन दमन के ही अभियान हैं। 'शांति' और 'विकास' के नाम पर सलवा जुडुम–2 का मतलब है, राज्य की प्राकृतिक संपदाओं व संसाधनों को देशी–विदेशी पूंजीपति घरानों के हवाले करने एवं स्वयं शासन व सही विकास की राह में दण्डकारण्य में नवादित जन राजसत्ता के अंग–क्रांतिकारी जनता ना सरकारों के उन्मूलन के लिए जनता पर जारी फासीवादी सैनिक–सांगठनिक दमन अभियान को तेज करना।

विगत 35 सालों के बस्तर के क्रांतिकारी आन्दोलन के इतिहास में कई दमन अभियानों का साहस के साथ मुकाबला करके, उन्हें परास्त करने वाली बस्तरिया लड़ाकू जनता अब के सलवा जुडुम–2 को भी मटियामेट करेगी। क्रांतिकारी जन आन्दोलन व जनयुद्ध वर्तमान सलवा जुडुम–2 के हत्यारे–गुण्डा गिरोह का वही हश्र करेगा जो हश्र उसने महेंद्र कर्मा एवं सलवा जुडुम के अन्य गुण्डों का किया था।

हमारी पार्टी दण्डकारण्य की संघर्षशील जनता का आह्वान करती है कि वह पहले जन जागरण व सलवा जुडुम को हराने के अपने विगत के अनुभवों व सीख के आधार पर वर्तमान सलवा जुडुम–2 का डटकर मुकाबला करके उसे परास्त करे। बस्तरिया जनता खासकर आदिवासियों को उनके जल–जंगल–जमीन से बेदखल करने के लिए संचालित इस जन दमन अभियान के प्रति सतर्क व सावधान रहने, इससे जुडने वालों पर कड़ी निगरानी रखने हम जनता से अपील करते हैं। चूंकि यह अभियान बस्तरिया आदिवासी, गैर–आदिवासी जनता के अस्तित्व के लिए बहुत बड़ा खतरा है इसलिए इस जन विरोधी अभियान से न सिर्फ दूर रहने, बल्कि इसके खिलाफ मजबूती से खडे होने हम आदिवासी व गैर–आदिवासी सामाजिक संगठनों, सर्व आदिवासी समाज व सर्व समाज से अपील करते हैं।

शोषक–शासक वर्गों की शांति का मतलब है, जनता पर जारी हिंसा, लूट–पाट, अत्याचार एवं जनता के शोषण, दमन को बिना सवाल किये चुप–चाप सहना। उनके विकास का मतलब है, जनता का विनाश व सर्वनाश। सरकारों के विकास का मतलब है–देशी, विदेशी औद्योगिक घरानों का विकास, जमींदारों का विकास, नेताओं व अफसरशाहों का विकास। विकास का मतलब वृहत् उद्योग, बड़ी खनन परियोजनाएं, बडे बांध, विशेष आर्थिक क्षेत्र, औद्योगिक गलियारें, परमाणु संयंत्र, वायु सैनिक व सैनिक अड्डें, सैनिक प्रशिक्षण शालाएं, चमचमाती सड़कें, सूपर हाईवेज, पंच सितारा होटलें, आसमान छूती महलें, मोबाइल टावर, कॉरपोरेट बैंकें एवं पुलिस थानें व कैंप ही हैं। विकास का मतलब जनता का विस्थापन। जनता के असली विकास से हमारी पार्टी का मतलब है, देश की बहुसंख्यक जनता को खाना, पानी, कपडा, मकान, जमीन, शिक्षा, इलाज, रोजगार, सिंचाई आदि मूलभूत सुविधाओं से लैस करना।

सन् 1990–91 के पहले 'जन जागरण', फिर 1997–98 के दूसरे 'जन जागरण' अभियान, जून, 2005 में प्रारंभ होकर चार साल तक संचालित सलवा जुडुम सैनिक, सांगठनिक दमन अभियान व सन् 2009 से प्रारंभ देशव्यापी फासीवादी सैनिक दमन अभियान ऑपरेशन ग्रीनहंट जो अभी जारी है, के कड़वे अनुभवों, उन अभियानों के दौरान जनता पर जारी अनगिनत अत्याचार, जनसंहार, हत्याएं, फर्जी मुठभेड़ें, मुठभेड़ें, महिलाओं का बलात्कार, लूट–पाट, आगजनी, अवैध गिरफ्तारियां, जेलों में सडाना, लंबी व उम्र कैद की सजाएं, सैकडों गांवों की तबाही, राहत शिविरों के नाम पर बंदी शिविरों–रणनीतिक बसाहटों में जनता को बंदी बनाकर रखना, आतंक व डर के मारे करीबन एक लाख लोगों का पलायन, दसियों हजार लोगों का बेघर होकर जंगलों में भटकते रहना आदि से केवल बस्तरिया जनता ही नहीं, देश–दुनिया की जनता भली भांति परिचित है। लालच देकर, डरा–धमकाकर, आतंकित करके आदिवासी युवाओं में से हजारों को एसपीओ बनाया गया। अपनी ही उंगली से अपनी आंखें फोडवाने व सामाजिक विभाजन की साजिश थी, वह। यहां यह गौर करने वाली बात है कि सलवा जुडुम को भी शांति अभियान के रूप में ही प्रचारित किया गया था।

मजबूत जन आन्दोलन व जनयुद्ध के जरिए इन तमाम अभियानों का डटकर मुकाबला किया गया था एवं किया जा रहा है। देश–दुनिया की प्रगतिशील व जनवादी बुद्धिजीवियों, लेखकों, शिक्षकों, वकीलों, मीडिया कर्मियों ने फासीवादी सैनिक–सांगठनिक दमन अभियान–सलवा जुडुम के खिलाफ अपनी आवाजें बुलंद की, सड़क पर उतर आये व कानूनी लड़ाई लड़ी। अंततः सरकार को सलवा जुडुम बंद करना पडा। वर्तमान ग्रीनहंट का पार्टी के नेतृत्व में पीएलजीए, जनता ना सरकारें, जन संगठन व जनता अनगिनत कुरबानियां देते हुए साहस के साथ मुकाबला कर रही हैं। इसे जनता पर युद्ध की संज्ञा देकर देश–दुनिया के सर्वहारा वर्गीय संगठन, माओवादी पार्टियां व संगठन, मानवाधिकार संगठन, बुद्धिजीवी, प्रगतिशील–जनवादी ताकतें व मीडिया इस पाशविक दमन अभियान के खिलाफ एवं भारत में जारी जनयुद्ध के समर्थन में अभूतपूर्व ढ़ंग से आगे आ रही हैं।

राज्य एवं देश–दुनिया की प्रगतिशील व जनवादी बुद्धिजीवियों, लेखकों, शिक्षकों, वकीलों, मीडिया कर्मियों व मानवाधिकार संगठनों से हम अपील करते हैं कि वे इस जन दमनकारी व विनाशकारी फासीवादी सांगठनिक अभियान के विरोध में सड़क पर उतरें, आवाज बुलंद करें एवं जनता के जल–जंगल–जमीन, संसाधनों, पर्यावरण, आदिवासी अस्तित्व व अस्मिता को बचाये रखने आगे आवें।

दमन अभियानों के दौरान जाने–अनजाने में, सरकारी सशस्त्र बलों के दबाव, धौंस, दमन, लालच की वजह से सलवा जुडुम अभियान से जुडकर व एसपीओ बनकर कुछ समय तक जन विरोधी काम करने वालों में से कइयों ने बाद में अपनी गलती को पहचानकर जनता के सामने आत्मसमर्पण किया। वे अपनी गलतियों के लिए माफी मांगकर जनता के बीच में, जनता के साथ मिलकर जीवनयापन कर रहे हैं। हमारी पार्टी ऐसे तमाम लोगों जो किसी दबाव, लालच, गलती या कमजोरी की वजह से जनता व जन आन्दोलन के खिलाफ हो गये हैं, को मौका देती है कि वे वापस जनता से मिलें, अपनी गलतियों को स्वीकार करें, माफी मांगे व गांवों में अपनों के बीच हंसी–खुशी से साधारण जीवन बिताएं।

हमारी पार्टी जन मुक्ति छापामार सेना–पीएलजीए के तीनों बलों का आह्वान करती है कि वे फिर से शुरु होने वाले सलवा जुडुम–2 – जन दमन अभियान से जुडने वाले जन विरोधियों, जन दुश्मनों व गद्दारों को जन अदालत में पेश करके उचित व आवश्यक कार्रवाई करें।

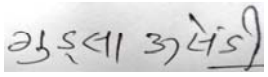

(गुड्सा ऊसेण्डी)

प्रवक्ता,

दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी,

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी).